कुरुक्षेत्र

पूर्वोत्तर भारत के प्रसिद्ध आदिवासी लोक नृत्य

भूमिका

- भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र दो सौ से अधिक जनजातियों और सजातीय समुदायों का घर है। इस क्षेत्र को अक्सर त्योहारों, संगीत और नृत्य विशेष क्षेत्र के रूप में जाना जाता है। प्रत्येक जनजाति या समुदाय के अपने अलग-अलग त्योहार होते हैं जिनमें से अधिकांश बुआई, कटाई और नए वर्ष पर केंद्रित होते हैं।

अरुणाचल प्रदेश के आदिवासी लोक नृत्य

- **रिखम पाडा नृत्य:** यह नृत्य निशी लोगों का सबसे महत्त्वपूर्ण लोक नृत्य है। इस नृत्य के साथ प्रेम की गाथाओं का वर्णन करने वाले गाथा गीत के रूप में गाने भी शामिल होते हैं।
- यह महिलाओं द्वारा देवताओं के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित करने के लिए किया जाता है।
- **पोतुंग नृत्य:** आदि जनजाति के लिए पोतुंग सबसे महत्त्वपूर्ण लोक नृत्य है। यह नृत्य विशेष रूप से महिलाओं द्वारा किया जाता है जो सोलुंग नामक फसल उत्सव के दौरान किया जाता है।
- **डेलॉन्ग नृत्य:** डेलॉन्ग पुरुषों का एक आदि लोक नृत्य है जो एटोर उत्सव के दौरान किया जाता है।
- इस नृत्य में गाँव के खेतों को जानवरों से बचाने के लिए उनके चारों ओर बाड़ बनाना या उनकी मरम्मत करना दर्शाया जाता है।

- **दामिडा नृत्य:** अपतानी लोगों के बीच, दामिडा लोक नृत्य उत्सव की शुरुआत और अंत को चिह्नित करने के लिए किया जाता है।
- महिलाओं द्वारा प्रस्तुत यह नृत्य पारंपरिक कृषि के विभिन्न पहलुओं को दर्शाता है और नर्तकियों के अद्भुत फुटवर्क एवं हाथ की मुद्राओं द्वारा इसे पहचाना जाता है।
- **चाम नृत्य:** मोनपा लोग, जो महायान बौद्ध धर्म को मानते हैं, उनके 22 अलग-अलग प्रकार के लोक नृत्य हैं जिन्हें 'चाम' कहा जाता है।
- फा चाम का प्रदर्शन एक अकेले व्यक्ति द्वारा भिक्षु की पोशाक में फा (सूअर) का मुखौटा पहनकर किया जाता है।
- दूसरी ओर, शनाग चाम का प्रदर्शन बारह नर्तकों द्वारा किया जाता है जो तांत्रिक पुजारियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

असम के आदिवासी नृत्य

- **बागरुम्बा नृत्य:** बागरुम्बा नृत्य युवा बोडो महिलाओं द्वारा आमतौर पर वसंत ऋतु में समुदाय की समृद्धि और कल्याण के लिए प्रार्थना करने के लिए किया जाता है।
- **गुमराग सोमन:** मिसिंग लोगों के बीच, गुमराग सोमन सबसे लोकप्रिय लोक नृत्य है, जो अली-ऐ लिगांग (वसंत ऋतु में बीज बोने का त्योहार) का हिस्सा है।
- **रिटनोंग चिंगडी, लिंगपम सौकयौन और हाचा हेकन नृत्य:** कार्की आदिवासी समुदाय में ये नृत्य कृषि से जुड़े लोक नृत्य हैं।
- **निम्सों केरुंग और बंजार केकन:** निम्सों केरुंग और बंजार केकन मृत्यु संबंधी रस्मों से जुड़े लोक नृत्य हैं।

मेघालय के आदिवासी नृत्य

- **नोंगक्रेम नृत्य:** मेघालय में, खासी लोग नोंगक्रेम उत्सव के दौरान नोंगक्रेम नृत्य करते हैं।
- यू लेई शिलॉन्ग नामक स्थानीय देवता को समर्पित यह नृत्य युवा महिलाओं द्वारा उनके सबसे अच्छे रंगीन पारंपरिक आभूषण पहने हुए किया जाता है।
- **वंगाला या हंड्रेड ड्रम नृत्य:** यह गारो समुदाय के वंगाला महोत्सव का हिस्सा है, जो कठिन परिश्रम की अवधि के अंत की पहचान है और अच्छी फसल के लिए प्रार्थना करने के लिए आयोजित किया जाता है।

मिज़ोरम

- **मिज़ो लोक नृत्य:** लगभग सभी मिज़ो लोक नृत्य, जैसे- चेराव, खुवल्लम, छिएह लाम, चाई, रल्लू लाम, सोलकिया, सरलामकाई और पार लाम कृषि चक्र से निकटता से संबंधित हैं।
- **चेराव:** जिसे अक्सर बाँस नृत्य भी कहा जाता है, सबसे पुराना मिज़ो नृत्य है और ऐसा माना जाता है कि यह पहली शताब्दी ईस्वी में भी अस्तित्व में था।
- **खुल्लम नृत्य:** आमतौर पर पुरुषों द्वारा किया जाता है इसे अतिथि का नृत्य भी कहा जाता है।
- **लाम नृत्य:** प्रकृति की संतान के रूप में युवा मिज़ो पुरुष और महिलाएँ, पार लाम नृत्य के माध्यम से पहाड़ों और नदियों की सुंदरता का उत्सव मनाते हैं।
- यह नृत्य धीमा, लेकिन बहुत आकर्षक है और इसमें मुख्य रूप से उनके हाथों की हरकतें शामिल हैं जैसे- बहती नदी की लहरें हों।

मणिपुर

- **अशराई ओडो:** माओ जनजाति के लिए, अशराई ओडो एक रंगों से भरा लोक नृत्य है जो अपनी स्वर, लय और मधुर गतिविधियों के लिए जाना जाता है।

- **लुइवाट फिज़्ज़ाक:** तांगखुल जनजाति के लोग लुइवाट फिज़्ज़ाक को अपना सबसे महत्त्वपूर्ण लोक नृत्य मानते हैं।
- खेती के विभिन्न चरणों और सरल आदिवासी जीवन शैली को दर्शाते हुए, यह नृत्य सभी पारंपरिक त्योहारों के दौरान किया जाता है।
- **शिम लैम और किट लैम:** काबुई आदिवासियों के बीच, शिम लैम या फ्लाई डांस और किट लैम दो सबसे लोकप्रिय लोक नृत्य हैं।
- शिम लैम का प्रदर्शन गैंग-नगाई उत्सव के दौरान किया जाता है और इसमें चमकदार पंखों वाला एक उड़ने वाला कीट ताजुइबोन की कहानी को दर्शाया जाता है।
- दूसरी ओर, किट लैम नृत्य एक फसल उत्सव है जिसमें लयबद्ध नृत्य झींगुरों की गति का अनुकरण करता है।

नागालैंड

- **सोवी केहू नृत्य:** अंगामी जनजाति का सबसे लोकप्रिय लोक नृत्य सोवी केहू है। यह एक सामुदायिक नृत्य है जो गाँव के केंद्र में एक खुली जगह पर होता है।
- **यिमडोंगसु त्सुंगसांग:** यिमडोंगसु त्सुंगसांग, एओ जनजाति का एक प्रसिद्ध लोक नृत्य है। यह विरासत और आध्यात्मिकता का उत्सव है
- **ओह हियो नृत्य:** चाकेसांग लोगों के बीच, ओह हियो त्योहारों और समारोहों के दौरान पुरुषों द्वारा किया जाने वाला एक लोकप्रिय लोक नृत्य है।
- नर्तक विभिन्न पक्षियों और जानवरों की हरकतों की नकल करते हैं, जैसे- मुर्गों की लड़ाई और बत्तखों द्वारा पंखों को फड़फड़ाना आदि।

त्रिपुरा

- **होजागिरी नृत्य:** त्रिपुरा में, रियांग आदिवासी होजागिरी उत्सव या लक्ष्मी पूजा के दौरान होजागिरी नृत्य करते हैं।
- जहाँ पुरुषों का एक समूह गीत की शुरुआत करता है और खाम (ड्रम) और सुमुई (बाँसुरी) बजाता है, वहीं चार से छह महिलाएँ नृत्य करती हैं जिसके दौरान वे झूम (काटना और जलाना) खेती के पूरे चक्र का चित्रण करती हैं।
- **गरिया नृत्य:** जमातिया और कलाई जनजातियाँ गरिया या शिव पूजा के दौरान गरिया नृत्य करती हैं।
- इसमें युवा पुरुष और महिलाएँ घर-घर जाते हैं, आँगन के बीच में भगवान गरिया का प्रतीक रखते हैं और इसके चारों तरफ घड़ी की सुई की विपरीत दिशा में घेरा बनाकर गाते हैं तथा नृत्य करते हैं।

जनजातीय संस्कृति के संरक्षण के लिए परियोजनाएँ

भूमिका

- दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी जनजातीय आबादी भारत में पाई जाती है। देश में आदिवासी लोगों की समृद्ध परंपराएँ, संस्कृतियाँ और विरासत हैं, साथ ही उनकी जीवन शैली और रीति-रिवाज भी अद्वितीय हैं। आदिवासी समुदायों के विविध परिदृश्य में, स्वदेशी विरासत को संरक्षित करने के लिए शक्तिशाली उपकरणों के रूप में अभिनव विज्ञान परियोजनाओं का उपयोग किया जा रहा है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (DST) ने आदिवासी समुदायों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के महत्त्व को पहचाना है तथा इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए और विज्ञान परियोजनाओं को समर्थन देने के लिए महत्त्वपूर्ण कदम उठाए हैं।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के प्रयास

- **स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों का दस्तावेज़ीकरण:** डी.एस.टी. आदिवासी समुदायों की स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों का दस्तावेज़ीकरण और संरक्षण करने के उद्देश्य से परियोजनाओं का समर्थन करता है।
- इन परियोजनाओं में अक्सर शोधकर्ताओं, मानवविज्ञानियों और आदिवासी बुज़ुर्गों के बीच पारंपरिक प्रथाओं, औषधीय ज्ञान, मौखिक इतिहास और सांस्कृतिक अनुष्ठानों को रिकॉर्ड करने के लिए सहयोग शामिल होता है।
- इस जानकारी को डिजिटल बनाने और संगृहीत करने से, डी.एस.टी. भविष्य की पीढ़ियों के लिए आदिवासी संस्कृति की निरंतरता और पहुँच सुनिश्चित करने में मदद करता है।
- **सांस्कृतिक विरासत स्थलों का संरक्षण और जीर्णोद्धार:** इसमें विरासत स्थलों की स्थिति का आकलन और निगरानी करने, संरक्षण हस्तक्षेप की योजना बनाने और उनके महत्त्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए रिमोट सेसिंग, भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) और 3Mh मॉडलिंग जैसी उन्नत वैज्ञानिक तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है।
- **अंत: विषय अनुसंधान को बढ़ावा देना:** डी.एस.टी. अंत:विषय अनुसंधान को बढ़ावा देता है जो आदिवासी क्षेत्रों में जैव-विविधता और सांस्कृतिक परिदृश्यों की रक्षा के लिए पारंपरिक पारिस्थितिकीय ज्ञान (Tra_ditional Ecological knowledge) को आधुनिक संरक्षण विज्ञान के साथ एकीकृत करता है।
- इसका उद्देश्य आदिवासी संस्कृतियों में निहित पारिस्थितिकीय ज्ञान को समझना और स्वदेशी प्रथाओं व मूल्यों का सम्मान करने वाली संरक्षण रणनीतियाँ विकसित करना है।

- **प्राकृतिक संसाधनों के सतत् प्रबंधन में योगदान:** वैज्ञानिकों, आदिवासी समुदायों और नीति निर्माताओं के बीच सहयोग को बढ़ावा देकर डी.एस.टी. सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा करते को हुए प्राकृतिक संसाधनों के सतत् प्रबंधन में योगदान देता है।

उत्तर-पूर्वी प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग एवं प्रसार केंद्र (NECTAR) द्वारा किए गए प्रयास

- **पूर्वोत्तर में बाँस का महत्त्व:** पूर्वोत्तर भारत की सांस्कृतिक मान्यताओं में बाँस का औषधीय और आध्यात्मिक महत्त्व है। पारंपरिक चिकित्सक स्वदेशी चिकित्सा पद्धतियों में उनके उपचार गुणों के लिए बाँस के अर्क का उपयोग करते हैं। इसके अलावा, बाँस को अक्सर आध्यात्मिकता से जोड़ा जाता है और कुछ समुदायों द्वारा इसे पवित्र पौधे के रूप में सम्मान दिया जाता है जो अनुकूलन, विकास और प्रकृति के साथ सामंजस्य का प्रतीक है।
- असम में, बिहू समारोहों के दौरान ढोल (ड्रम) जैसे बाँस से बने वाद्ययंत्रों का उपयोग किया जाता है।
- नागालैंड में बाँस से पारंपरिक मोरंग (सामुदायिक घर) बनाए जाते हैं, जहाँ युवा विशेष रूप से कुँवारे लोग अनुशासन, रीति-रिवाज और परंपरा, सैन्य रणनीति, कला एवं संस्कृति आदि जैसी महत्त्वपूर्ण बातें सीखते हैं।
- **पारंपरिक टेराकोटा संरक्षण:** पारंपरिक मिट्टी के बर्तनों की संस्कृति के सतत् विकास के लिए, नेक्टर (NECTAR) ने असम के धुबरी के अशारिकंडी में पारंपरिक टेराकोटा और मिट्टी के बर्तनों के व्यवसाय में सुधार और उसके संरक्षण तथा उसे जारी रखने हेतु मदद की है।
- इसने इंफाल पूर्वी मणिपुर में 'चारेई ताबा पॉटरी' (कॉइल पॉटरी) की प्राचीन विरासत कला को संरक्षित करने में मदद की है।

- **बाँस-आधारित विज्ञान परियोजना:** बाँस क्षेत्र को बढ़ावा देने, इसके मूल्य संवर्द्धन और बाज़ार संपर्क स्थापित करने के लिए बाँस और बेंत विकास संस्थान (BCDI)] अगरतला, त्रिपुरा के सहयोग से एक बाँस-आधारित प्रौद्योगिकी प्रदर्शन केंद्र (TDC) की स्थापना की गई है।
- पूर्वोत्तर क्षेत्र और देश के अन्य हिस्सों के प्रतिभागियों के प्रशिक्षण और कौशल विकास के लिए बाँस और बेंत विकास संस्थान (BCDI) परिसर, अगरतला में नेक्टर-बी.सी.डी.आई. इनक्यूबेशन सह-नवाचार और प्रौद्योगिकी प्रदर्शन केंद्र (IITDC) नामक एक संयुक्त केंद्र भी स्थापित किया गया है।
- नेक्टर ने बाँसुरी बनाने की एक तकनीक विकसित की है। यह तने को काटने या तने को सेट करने की तकनीक है, जो बाँस को तेज़ी से पुनर्जीवित करने में सक्षम बनाती है।
- **गैसीफायर:** बाँस पर आधारित गैसीफायर को स्वच्छ और नवीकरणीय बिजली तथा उच्च श्रेणी के चारकोल जैसे कई मूल्यवान उप-उत्पादों का उत्पादन करने के लिए विकसित किया गया है।
- **चारकोल और सक्रिय कार्बन का उत्पादन:** बाँस के प्रसंस्करण द्वारा 'अपशिष्ट' से उच्च ग्रेड चारकोल और सक्रिय कार्बन का उत्पादन। इसका उपयोग कीटाणुनाशक, दवा, कृषि रसायन और प्रदूषण तथा अत्यधिक नमी को सोखने के लिए किया जा सकता है।
- **हरित सामग्री दृष्टिकोण के साथ बाँस-आधारित प्रौद्योगिकियाँ:** नेक्टर विभिन्न प्रकार के निर्माण में बाँस और बाँस-आधारित मिश्रित सामग्री के उपयोग को बढ़ावा दे रहा है जो बाँस-आधारित आवास की आदिवासी संस्कृति को संरक्षित करने की दिशा में एक और कदम है।

- बाँस से सेनेटरी और बिजली के सामानों का उत्पादन
- बाँस-आधारित जल सिंचाई प्रणाली
- बाँस के नलों से संबंधित विज्ञान परियोजनाएँ
- बाँस जल टॉवर का निर्माण
- कम लागत वाला जल उपचार संयंत्र

➢ **कौशल विकास एवं रोज़गार सृजन:** नेक्टर ग्रामीण जनता के कौशल विकास के बाँस-आधारित आदिवासी संस्कृति को समृद्ध करने में प्रमुख भूमिका निभा रहा है। इसके लिए कार्यक्रम भी शुरू किए हैं, ताकि आदिवासी आत्मनिर्भर बन सकें व सतत् आजीविका प्राप्त कर सकें।

➢ कौशल विकास प्रशिक्षण सहित प्राथमिक प्रसंस्करण मशीनरी उपलब्ध कराई जाती है। चटाई बुनाई, प्राकृतिक रंगों के उपयोग, बाँस की टहनियों के प्रसंस्करण, अगरबत्ती की छड़ियों को बनाने और धूपबत्ती निर्माण के क्षेत्रों में कौशल उन्नयन प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाता है।

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के प्रयास

➢ भारत में पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा पर्यावरण संरक्षण और सतत् विकास को बढ़ावा देते हुए आदिवासी समुदायों को सशक्त बनाने के उद्देश्य से विभिन्न विज्ञान परियोजनाएँ लागू की गई हैं-

➢ **पारिस्थितिकीय ज्ञान का आधुनिक वैज्ञानिक प्रथाओं के साथ एकीकरण:** मंत्रालय पारंपरिक पारिस्थितिकीय ज्ञान को आधुनिक वैज्ञानिक प्रथाओं के साथ एकीकृत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

➢ **नेशनल मिशन फॉर ग्रीन इंडिया:** नेशनल मिशन फॉर ग्रीन इंडिया जैसी पहलों के माध्यम से, मंत्रालय आदिवासी क्षेत्रों में वनीकरण कार्यक्रमों, जैव-विविधता संरक्षण और सतत् संसाधन प्रबंधन का समर्थन करता है।

- ये परियोजनाएँ न केवल पर्यावरण की रक्षा करती हैं, बल्कि आदिवासी समुदायों के सांस्कृतिक परिदृश्य और आजीविका की भी रक्षा करती हैं।
- **पारंपरिक पारिस्थितिकीय ज्ञान प्रलेखन:** इस योजना के तहत परियोजनाओं का उद्देश्य स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों का दस्तावेज़ीकरण, संरक्षण और उपयोग करना है।
- इसमें जैव-विविधता संरक्षण, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन और जलवायु के लचीलेपन से संबंचित पारंपरिक प्रथाओं को सूचीबद्ध करने के लिए आदिवासी बुज़ुर्गों, शोधकर्ताओं और स्थानीय संस्थानों के बीच सहयोग शामिल है।
- **जैव-विविधता संरक्षण और सतत् आजीविका कार्यक्रम:** यह उन परियोजनाओं हेतु मदद करता है जो आदिवासी समुदायों के लिए जैव-विविधता संरक्षण को सतत् आजीविका विकल्पों के साथ एकीकृत करती है।
- इसमें वन पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली और प्रबंधन, गैर-लकड़ी वन उपज (NTFP) आधारित उद्यमों को बढ़ावा देना और पारिस्थितिकी पर्यटन पहल शामिल है।
- **समुदाय-आधारित वन प्रबंधन कार्यक्रम:** इस कार्यक्रम में स्थानीय आदिवासी समुदायों को शामिल करते हुए भागीदारीपूर्ण वन प्रबंधन प्रथाओं को प्रोत्साहित किया जा रहा है।
- यह आदिवासी समूहों को वन संरक्षण, वनीकरण और पुनर्जनन गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए सशक्त बनाती है।
- **जलवायु परिवर्तन अनुकूलन और शमन विज्ञान परियोजनाएँ:** ये परियोजनाएँ आदिवासी समुदायों की ज़रूरतों के अनुरूप जलवायु परिवर्तन अनुकूलन और शमन रणनीतियों पर केंद्रित है।

- इनमें जलवायु अनुकूल कृषि पद्धतियों, नवीकरणीय ऊर्जा प्रौद्योगिकियों और समुदाय-आधारित आपदा जोखिम न्यूनीकरण उपायों को बढ़ावा देना शामिल है।
- **क्षमता निर्माण कार्यक्रम और जागरूकता अभियान:** यह अभियान समुदायों को पर्यावरण विज्ञान के मुद्दों और संरक्षण प्रथाओं के बारे में उनकी समझ बढ़ाता है।
- इन पहलों के तहत टिकाऊ भूमि उपयोग प्रथाओं, अपशिष्ट प्रबंधन तकनीकों, जैव-विविधता संरक्षण और अन्य प्रासंगिक विषयों पर प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

निष्कर्ष

- विभिन्न विज्ञान परियोजनाओं ने वैज्ञानिक अनुसंधान और क्षमता निर्माण के साथ आदिवासी समुदायों के पारंपरिक ज्ञान की क्षमता का दोहन करके आदिवासी संस्कृति को संरक्षित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे पूर्वोत्तर भारत के सामाजिक-आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण में योगदान मिला है।
- भारत में आदिवासियों के लिए विज्ञान परियोजनाओं का उद्देश्य जैव-विविधता संरक्षण और सामुदायिक कल्याण के बीच सहजीवी संबंध के साथ आदिवासी संस्कृति की रक्षा और संरक्षण करना है।
- वैज्ञानिक विशेषज्ञता, पारंपरिक ज्ञान और सहभागितापूर्ण दृष्टिकोण का लाभ उठाकर, ये पहल पारिस्थितिकीय अनुकूलन और सामाजिक समानता को बढ़ावा देते हुए आदिवासी संस्कृति के संरक्षण में योगदान देती है।

जनजातीय संस्कृति: वैश्विक प्रतिनिधित्व का सामर्थ्य

भूमिका

- भारत की जनजातीय कला पेंटिंग, बुनाई और नृत्य जैसी विविध कलात्मक अभिव्यक्तियों से समृद्ध हैं जिसमें वैश्विक सांस्कृतिक संवाद के लिए पर्याप्त क्षमता मौजूद है। प्रकृति और सामुदायिक जीवन में गहराई से निहित कला के ये रूप स्थायी प्रथाओं और दार्शनिक मान्यताओं को दर्शाते हैं जो पारिस्थितिकीय संतुलन और सह-अस्तित्व पर ज़ोर देते हैं। जनजातीय कला का संरक्षण न केवल इन अद्वितीय सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों की सुरक्षा करता है, बल्कि विश्व स्तर पर जीवन जीने के एक स्थायी मॉडल को भी बढ़ावा देता है।

प्रतीकवाद तथा प्रकृति और जीवन से संबंध

- भारत में जनजातीय कला प्राचीन लोक कथाओं और जनजातीय मिथकों से भरपूर है, जिनमें से प्रत्येक सृजन, अस्तित्व और प्रकृति के साथ सद्भाव में रहने की अपनी कहानी कहता है।
- कई जनजातीय कलाकृतियों के केंद्र में ऐसे रूपांकन हैं जो प्राकृतिक तत्त्वों, आध्यात्मिक मार्गदर्शकों और जनजातीय विद्या का प्रतीक हैं।
- मध्य भारत की भील जनजाति कहानियों को दर्शाने के लिए डॉट और डैश का उपयोग करते हुए एक अलग तरह की शैली अपनाती हैं।
- मध्य प्रदेश की गोंड पेंटिंग जीवंत और जटिल हैं, जो अक्सर प्रकृति के तत्त्वों के साथ जुड़े देवताओं, पुरुषों और जानवरों की कहानियों को चित्रित करती हैं।
- इन पेंटिंग्स में लोक कथाओं के दृश्यों को चित्रित करने के लिए चमकीले रंगों और पैटर्न का उपयोग किया जाता है, जो प्रकृति की उदारता के प्रति जनजाति की श्रद्धा को उजागर करती हैं।

- संगीत और नृत्य आदिवासी उत्सवों और अनुष्ठानों का प्रमुख अवयव हैं, जो कला के अन्य रूपों के साथ गहराई से जुड़े हुए हैं तथा जो भारत के आदिवासी समुदायों की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक हैं।
- झारखंड की संथाल जनजाति अपने लयबद्ध ढोल और लोक नृत्यों के लिए जाने जाते हैं।
- भील जनजाति के नृत्य ऐतिहासिक और पौराणिक घटनाओं का प्रतीक हैं। ये नृत्य अक्सर वर्ष के विशिष्ट समय के दौरान किए जाते हैं जो आदिवासी विद्या और विरासत को और अधिक मज़बूत करता है।
- पूर्वोत्तर की नागा जनजातियों के लोक गीत और पारंपरिक नृत्य हॉर्नबिल महोत्सव जैसे त्योहारों का एक अभिन्न अंग हैं।
- ये गीत और नृत्य ऐतिहासिक महत्त्व से ओत-प्रोत हैं और पीढ़ी-दर-पीढ़ी कहानियों और परंपराओं को आगे बढ़ाने का एक साधन हैं।
- ये सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ जनजाति के युवा सदस्यों को उनकी विरासत से जुड़ने का अवसर प्रदान करती हैं, जिससे कि यह सुनिश्चित हो कि ये सदियों पुरानी परंपराएँ युगों तक गूंजती रहें और अपनाई जाती रहें।

दार्शनिक आधार और वैश्विक प्रासंगिकता

- भारत में जनजातीय कला की दार्शनिक नींव गहन रूप से पारिस्थितिकीय है, जो स्थिरता और न्यूनतम पर्यावरणीय प्रभाव पर ज़ोर देती है। ये प्रथाएँ प्रकृति के प्रति गहरा सम्मान दर्शाती हैं, अक्सर अपने कलात्मक कार्यों में स्थानीय रूप से प्राप्त सामग्रियों और प्राकृतिक रंगों का उपयोग करती हैं।
- भारत के जनजातीय समुदायों के कला रूप और दैनिक प्रथाएँ पर्यावरण-अनुकूल जीवन जीने में मूल्यवान सीख प्रदान करती हैं ये दर्शाती हैं कि किस प्रकार पारंपरिक ज्ञान और तकनीकें पर्यावरण के साथ अधिक घनिष्ठ संबंध स्थापित कर सकती हैं।

- शिल्प में जैविक सामग्रियों का उपयोग, पवित्र उपवनों के माध्यम से स्थानीय वनस्पतियों और जीवों का संरक्षण, और टिकाऊ फसल पद्धतियाँ जीवन के एकीकृत दृष्टिकोण को उजागर करती हैं जो वैश्विक पर्यावरणीय कार्यनीतियों को प्रेरित कर सकती हैं।
- सह-अस्तित्व और सभी जीवन रूपों के लिए सम्मान का जनजातीय दर्शन आज के संदर्भ में पूर्ण रूप से प्रासंगिक है, जहाँ पारिस्थितिकीय असंतुलन और संसाधनों की कमी चिंता का विषय है।
- भारत के जनजातीय समुदाय, अपनी कला और जीवन शैली के माध्यम से, मानवीय आवश्यकताओं और पर्यावरणीय प्रबंधन के बीच संतुलन का समर्थन करते हैं, जो स्थायी और सतत् जीवन के लिए एक रूपरेखा प्रदान करते हैं जिससे बाकी दुनिया सीख सकती है।
- ये दार्शनिक आधार केवल सैद्धांतिक नहीं हैं, बल्कि इन समुदायों के दैनिक जीवन के व्यावहारिक अनुप्रयोगों में अंतर्निहित हैं।
- ये वैश्विक समुदाय के लिए एक मॉडल के रूप में काम करते हैं कि किस प्रकार पारिस्थितिकीय संतुलन और सांस्कृतिक समृद्धि बनाए रखी जा सकती है।

बौद्धिक संपदा: जनजातीय कला की सुरक्षा

- जनजातीय कला की बौद्धिक संपदा की रक्षा करके न केवल इन अद्वितीय सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों की रक्षा होती है, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया जाता है कि उनके बाद आने वाले समुदायों को मान्यता दी जाए और उन्हें पर्याप्त मुआवज़ा दिया जाए।
- यह न केवल जनजातियों की आर्थिक स्थिरता में, बल्कि उनकी कलात्मक परंपराओं की सांस्कृतिक अखंडता और निरंतरता में भी योगदान देता है।

- वारली पेंटिंग जैसी जनजातीय कलाओं के लिए भौगोलिक संकेत जी.आई. टैग की शुरुआत, इन सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों की सुरक्षा में एक प्रभावी उपाय साबित हुई है।
- इस तरह की पहल न केवल कलात्मक अभिव्यक्तियों की रक्षा करती है, बल्कि एक कानूनी ढाँचा भी प्रदान करती है जो आदिवासी समुदायों के आर्थिक कल्याण में मदद करती है।

नैतिक पर्यटन : सांस्कृतिक स्थिरता का मार्ग

- नैतिक पर्यटन, आदिवासी समुदायों के सांस्कृतिक और प्राकृतिक वातावरण के साथ जुड़ने तथा उसे संरक्षित करने के लिए एक सम्मानजनक एवं स्थिर दृष्टिकोण प्रदान करता है।
- पर्यटन का यह रूप जनजातीय समुदायों की सांस्कृतिक परंपराओं और पारिस्थितिकीय वास्तविकताओं के प्रति संवेदनशील बातचीत को प्रोत्साहित करता है।
- नैतिक पर्यटन के एक मॉडल में पर्यटकों का कार्यशालाओं और गाँव के दौरे जैसे सांस्कृतिक अनुभवों में भाग लेना शामिल है, जो जनजाति की जीवन शैली और रीति-रिवाजों का सम्मान करते हुए आयोजित किए जाते हैं।
- ये अनुभव न केवल पर्यटकों को जनजातियों की समृद्ध सांस्कृतिक टेपेस्ट्री के बारे में शिक्षित करते हैं, बल्कि आर्थिक अवसर भी पैदा करते हैं जिससे आदिवासी समुदायों को सीधे लाभ होता है।
- यह वैश्वीकरण और सांस्कृतिक विलयन की ताकतों के प्रति संतुलन के रूप में भी कार्य कर सकता है, इससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान का एक स्थायी मॉडल मिल सकता है जिससे आगंतुकों और मेज़बान समुदायों दोनों को लाभ होता है।

- नैतिक पर्यटन को वास्तव में प्रभावी बनाने के लिए इसे जनजातीय समुदायों की पूर्ण भागीदारी और सहमति से लागू किया जाना चाहिए।
- इसमें यह सुनिश्चित करना शामिल है कि समुदायों का इस पर नियंत्रण हो कि उनकी संस्कृतियाँ बाहरी लोगों के साथ कैसे प्रस्तुत और साझा की जाती हैं तथा उन्हें पर्यटन से प्राप्त आर्थिक लाभों का उचित हिस्सा प्राप्त हो।
- जीवंत संग्रहालय जनजातीय संस्कृति, कला और परंपराओं के संरक्षण एवं प्रदर्शन के लिए गतिशील मंच के रूप में कार्य करते हैं।
- पारंपरिक संग्रहालयों के विपरीत, जीवंत संग्रहालय इंटरेक्टिव अनुभव प्रदान करते हैं जो आगंतुकों को आदिवासी समुदायों की सांस्कृतिक प्रथाओं और दैनिक जीवन की गतिविधियों से सीधे जुड़ने की अनुमति देते हैं। ये संग्रहालय अतीत और वर्तमान के बीच की खाई को पाटते हुए, सांस्कृतिक शिक्षा और प्रशंसा के लिए एक अनूठा अवसर प्रदान करते हैं।
- भारत में, तमिलनाडु में दक्षिणचित्र और मध्य प्रदेश में जनजातीय संग्रहालय जैसे उदाहरण जीवंत संग्रहालयों के सफल कार्यान्वयन को दर्शाते हैं।
- ये संग्रहालय कलाकृतियों को संरक्षित करने के अलावा परंपराओं को जीवित रखते हैं, रोज़गार के अवसर प्रदान करते हैं तथा यह सुनिश्चित करते हैं कि ज्ञान भावी पीढ़ियों तक पहुँचाया जाए।

भविष्य की दशा-दिशा

- भारत में जनजातीय कला न केवल देश की सांस्कृतिक विविधता का प्रतिबिंब है, बल्कि इसकी समृद्ध ऐतिहासिक विरासत का एक जीवंत प्रमाण भी है। इन कलारूपों का संरक्षण न केवल सांस्कृतिक विविधता को बनाए रखने के लिए, बल्कि वैश्विक समुदाय को स्थायी और नैतिक जीवन प्रथाओं के बारे में शिक्षित और समृद्ध करने के लिए भी महत्त्वपूर्ण है।

- तेज़ी से सांस्कृतिक समरूपीकरण की ओर बढ़ रही दुनिया में, जनजातीय कला की विशिष्टता हमें सांस्कृतिक संरक्षण और प्रशंसा के प्रति हमारे दृष्टिकोण पर पुनर्विचार करने की चुनौती देती है।
- यह हमसे ऐसी और अधिक समावेशी नीतियों को अपनाने का आग्रह करती है जो इन अनूठी परंपराओं की सुरक्षा का समर्थन करें।
- सरकारों, सांस्कृतिक संगठनों और समुदायों को आदिवासी कलारूपों का संरक्षण और संवर्द्धन करने वाली रूपरेखा बनाने के लिए सहयोग करना चाहिए। इसमें शामिल हैं-
- बौद्धिक संपदा कानूनों को मज़बूत करना
- सब्सिडी और अनुदान के माध्यम से स्थानीय कारीगरों का समर्थन करना
- शिक्षा तथा मीडिया के माध्यम से सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाना
- इसके अलावा, वैश्विक साझेदारी को बढ़ावा देने से इन संस्कृतियों को संरक्षित करने के प्रयासों को बढ़ाया जा सकता है।

निष्कर्ष

- आदिवासी कला केवल प्रशंसा का विषय बनने से आगे बढ़कर सांस्कृतिक स्थिरता और वैश्विक विरासत संरक्षण की आधारशिला बन सकती है। प्रभावी कार्यनीतियों को एकीकृत करके, हम न केवल भारत की जनजातीय कला के संरक्षण और संवर्द्धन में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, बल्कि यह सुनिश्चित करते हैं कि यह हमारी सामूहिक वैश्विक विरासत का एक जीवंत और अनमोल हिस्सा बनी रहें।

भारत में जनजातियों की सांस्कृतिक विरासत

भूमिका

- भारत की जनजातीय परंपरा और सांस्कृतिक विविधता अपनी प्रासंगिकता और तर्कसंगतता के साथ दुनिया में सबसे प्राचीन और अद्वितीय है। भारत में जनजातीय समुदायों को हाशिए पर रखने, आर्थिक असमानताओं और पारंपरिक भूमियों को हटाने जैसी चुनौतियों के बावजूद, जनजातीय संस्कृतियाँ अपने अद्वितीय रीति-रिवाजों, भाषाओं और कलारूपों को संरक्षित करते हुए फल-फूल रही हैं।
- भारत का सांस्कृतिक परिदृश्य इसके जनजातीय समुदायों की जीवंत परंपराओं से काफी समृद्ध है, जिसमें प्रकृति और स्वदेशी मान्यताओं में गहराई से निहित संगीत, नृत्य, कला और अनुष्ठानों की एक विस्तृत शृंखला शामिल है।
- एक जीवंत और समावेशी समाज को बढ़ावा देने के लिए सांस्कृतिक विविधता आवश्यक है। यह दुनिया के बारे में हमारी समझ को समृद्ध करता है, सहिष्णुता को बढ़ावा देता है और जीवन के विभिन्न दृष्टिकोणों एवं तरीकों के प्रति सम्मान को प्रोत्साहित करता है।

जनजातीय संस्कृतियों के विभिन्न अवयव

- **आदिवासी चित्रकला:** भारत की प्रमुख जनजातियों में गोंड जो मुख्य रूप से मध्य भारत में पाए जाते हैं, इनके द्वारा गोंड चित्रकारी की जाती है। इसमें गोंड कथाओं, गीतों एवं कहानियों का चित्रण किया जाता है।
- वारली चित्रकला, महाराष्ट्र की प्रमुख चित्रकला है जो मिट्टी की दीवारों में त्रिभुज, वृत्त और वर्ग का उपयोग करते हुए की जाती है।

- ओडिशा के पट्टचित्र स्क्रॉल पौराणिक कथाओं को बड़ी गूढ़ता के साथ उजागर करते हैं।
- **रीति-रिवाज परंपराएँ:** पूर्वोत्तर क्षेत्र में, नागा, मिज़ो और खासी जैसी जनजातियाँ अपनी विशिष्ट भाषाएँ, रीति-रिवाज और पारंपरिक शासन प्रणाली बनाए रखती हैं।
- मुख्य रूप से पश्चिमी और उत्तरी भारत में रहने वाले भील और गुज्जर जनजातियों का कृषि एवं पशुचारण से गहरा संबंध है, जो उनकी जीवन शैली व लोक कथाओं में परिलक्षित होता है।
- **भाषाएँ और बोलियाँ:** भारतीय जनजातियों द्वारा बोली जाने वाली कुछ प्रमुख भाषाओं और बोलियों में संथाली, गोंडी, मिज़ो, भीली, ओराँव आदि शामिल हैं।
- ये भाषाएँ और बोलियाँ, कई अन्य भाषाओं के साथ, भारत के जनजातीय समुदायों की समृद्ध सांस्कृतिक कैनवास में अपूर्व योगदान करती हैं।
- **लोक कथाएँ:** भारतीय जनजातीय लोक कथाएँ देश भर में स्वदेशी समुदायों के भीतर पीढ़ियों से चले आ रहे मिथकों, पौराणिक कथाओं और दंतकथाओं का खज़ाना है।
- गोंड, संथाल और खासी जैसी जनजातियों की लोक कथाओं में समृद्ध मौखिक महाकाव्य मिलते हैं जो सृजन, वीरता और अलौकिक प्राणियों की कहानियाँ सुनाते हैं।
- संथाल जनजाति की 'महानायक ठाकुर जीउ' पौराणिक कथा उनके पूजनीय व्यक्ति के वीरतापूर्ण कार्यों को दर्शाती है।
- इसी प्रकार, गोंड लोक कथाओं में 'सिंग बोंगा' प्रकृति और सृजन का आध्यात्मिक सार प्रस्तुत करता है।

- खासियों का 'यू थलेन', मिज़ो लोक कथाओं में 'द लीजेंड ऑफ पु लल्लुला' नागा समुदाय में 'पु जाबी की गाथा' आदि का विशेष महत्त्व है।
- लोक गीत : लोक गीत परंपराएँ भारतीय जनजातियों की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने, अपने समुदायों के भीतर पहचान और अपनेपन की भावना को बढ़ावा देने एवं अतीत को वर्तमान से जोड़ने के लिए एक पुल के रूप में कार्य करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

जनजातीय सांस्कृतिक विरासत का विभिन्न क्षेत्रों में योगदान

- **संगीत के क्षेत्र में:** भारत में जनजातीय समुदायों ने देश के संगीत उद्योग में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। आदिवासी संगीत में आमतौर पर ड्रम, बाँसुरी, तार वाले वाद्ययंत्र और स्वदेशी ताल वाद्यों का उपयोग किया जाता है। प्रमुख जनजातीय संगीतकारों में शामिल हैं :
  - छत्तीसगढ़ से तीजन बाई
  - नागालैंड से तेत्सियो बहनें और रेबेन मशांगवा
  - झारखंड से मुकुंद लाल नायक, नंद लाल नायक
  - असम से पंचुना राभा
  - सिक्किम से सोनम शेरिंग लेप्चा, नरेन गुरुंग और हिल्डा मिट लेप्चा
- **भारतीय सिनेमा में जनजातीय संगीत:** भारतीय सिनेमा में, कई संगीत रचनाएँ, नृत्य और जंगल के दृश्यों ने आदिवासी जीवन से प्रेरणा ली है, जिससे सिनेमाई अनुभव में गहराई और प्रामाणिकता आई है।
- **भारतीय रंगमंच:** भारतीय नाटकों में, आदिवासियों को अक्सर देश की सामाजिक-राजनीतिक जटिलताओं और सांस्कृतिक विविधता को दर्शाने वाले अभिन्न पात्रों के रूप में चित्रित किया जाता है।

- बिजन भट्टाचार्य के 'सोनाझुरी' जैसे नाटक शोषण और उत्पीड़न के खिलाफ आदिवासी समुदायों के संघर्षों को बताने के साथ-साथ भूमि अधिकारों एवं विस्थापन के मुद्दों पर प्रकाश डालते हैं।
- सत्यजीत रे की 'हीरक राजार देशे' जैसी फिल्मों में आदिवासियों को अधिकारविहीन समुदाय के रूप में दिखाया गया है।
- 'पिरामा' संथाल जनजाति की बहादुरी और नेतृत्व की कहानी को प्रदर्शित करता है। गोंड जनजाति से 'करमाबाई' है जो अन्याय के खिलाफ संघर्ष को दर्शाती है।

उत्सव और त्योहार

- भारत का सांस्कृतिक परिदृश्य जीवंत उत्सवों और त्योहारों से भरा हुआ है जो अपने आदिवासी समुदायों की समृद्ध और विविध पहचान को बयां करते हैं।
- राष्ट्रीय जनजातीय महोत्सव (आदि महोत्सव) और भारत का जनजातीय महोत्सव (आदिवासी जात्रा) देश भर की स्वदेशी जनजातियों की असंख्य परंपराओं, कलाओं और व्यंजनों को प्रदर्शित करने का काम करते हैं।
- छत्तीसगढ़ में, बस्तर दशहरा महोत्सव, नागालैंड का हॉर्नबिल महोत्सव, मेघालय का वांगला महोत्सव और मिज़ोरम का 'मिम कुट' महोत्सव फसल अनुष्ठानों, संगीत और नृत्य के साथ आदिवासी विरासत का सम्मान करते हैं।
- अरुणाचल प्रदेश का ज़ेरो संगीत महोत्सव और पश्चिम बंगाल का पौष मेला आदिवासी समुदायों की कलात्मक प्रतिभाओं को उजागर करता है।
- झारखंड का करम महोत्सव और मिज़ोरम का चेराव नृत्य महोत्सव आदिवासी आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक प्रथाओं की झलक पेश करता है।

- ये उत्सव न केवल जनजातीय परंपराओं को संरक्षित करते हैं, बल्कि विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के बहुरंगी समागम के लिए समझ, प्रशंसा और सम्मान को भी बढ़ावा देते हैं जो भारत की जनजातीय विरासत हैं।

शिल्प कला कौशल

- पोचमपल्ली इकत के जटिल टाई-एंड-डाई पैटर्न से लेकर फुलकारी कढ़ाई के जीवंत फूलों वाले रूपांकनों तक, प्रत्येक कपड़ा अपने आदिवासी रचनाकारों की कहानियों और प्रतीकों को दर्शाता है।
- डोकरा आभूषण, अपने देहाती आकर्षण और प्राचीन तकनीक के साथ, आदिवासी शिल्प कौशल का सार दर्शाते हैं, जबकि टेराकोटा आभूषण आदिवासी रूपांकनों से सजी मिट्टी की सुंदरता को प्रदर्शित करते हैं।
- हिमाचल प्रदेश से लेकर मणिपुर तक हाथ से बुने हुए शॉल आदिवासी बुनकरों की कुशल कलात्मकता की गवाही देते हैं, जिनका प्रत्येक धागा सांस्कृतिक अस्मिता के गौरव से बुना हुआ होता है।
- नागा योद्धाओं के शरीर पर बने विस्तृत टैटू से लेकर गुजराती आदिवासी महिलाओं के हाथों की मेहंदी डिज़ाइन तक शरीर की ये सजावटें, पहचान, आध्यात्मिकता और सुंदरता की अभिव्यक्ति के रूप में काम करती हैं।
- आदिवासी बैग, टोपी, जूते और बेल्ट जैसी सहायक सामग्री आदिवासी शिल्प कौशल की दक्षता और संसाधनशीलता को दर्शाती हैं।
- ये भारतीय वस्त्र, आभूषण, वेशभूषा और शरीर की सजावटें न केवल भारत के आदिवासी समुदायों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करती हैं, बल्कि ये अपने लचीलेपन, रचनात्मकता और स्थायी विरासत के सजीव अनुस्मारक के रूप में भी काम करते हैं।

जनजातीय व्यंजन

- भारत के जनजातीय व्यंजन देश के स्वदेशी समुदायों की समृद्ध पाक विरासत की आकर्षक झलक पेश करते हैं।
- पूर्वोत्तर की कोमल बाँस से बने भोजन, गोंड जनजाति की लाल चींटी की चटनी, महुआ फूल से व्यंजन न केवल स्वादिष्ट होते हैं, बल्कि पाक कला की सरलता, सांस्कृतिक समृद्धि और प्रकृति से जुड़ाव के प्रमाण के रूप में भी काम करते हैं।
- विभिन्न आदिवासी समुदायों द्वारा भिन्न-भिन्न प्रकार से बने मादक पेय, उत्सवों के दौरान विशेष रूप से प्रयोग किए जाते हैं।

प्राचीन परंपराएँ

- भारत के जनजातीय समुदायों की आध्यात्मिक दुनिया प्राचीन मान्यताओं, रहस्यमय अनुष्ठानों और प्रकृति के साथ गहरे संबंध से बुनी हुई है जो प्राकृतिक और अलौकिक क्षेत्रों के साथ उनके संवाद का मार्गदर्शन करती है।
- पैतृक आत्माओं और आदिवासी देवताओं की पूजा से लेकर पवित्र परिदृश्यों एवं प्राकृतिक तत्त्वों के प्रति श्रद्धा तक, आदिवासी पृथ्वी की लय व जीवन के चक्रों में परमात्मा का अनुभव करते हैं।
- अपनी आध्यात्मिक प्रथाओं के माध्यम से, आदिवासी अपने आसपास की दुनिया के साथ परस्पर जुड़ाव की गहरी भावना रखते हैं, सभी जीवित प्राणियों के प्रति सम्मान को बढ़ावा देते हैं और अपने पूर्वजों के ज्ञान का सम्मान करते हैं।
- भारत के आदिवासियों की आध्यात्मिक दुनिया में, पवित्रता और धर्मनिरपेक्षता एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, जो अस्तित्व की गहन और कालातीत समझ को प्रदर्शित करते हैं।

सांस्कृतिक समरसता के संरक्षण में

आदिवासी कला का योगदान

- जनजातीय रचनाएँ निस्संदेह आधुनिक सांस्कृतिक विरासत के जीवंत भंडार के रूप में काम करती हैं। इसलिए, पहाड़ों-जंगलों और कंदराओं की देशज रचनाएँ कई आदिवासी समुदायों की मान्यताओं, रीति-रिवाजों और परंपराओं की निरूपक होती हैं, उन सबका प्रतिनिधित्व करती हैं।
- मध्य प्रदेश के गोंड और झारखंड के संथाल के बीच रंगीन पेंटिंग स्थानीय भावनाओं का सार प्रस्तुत करती हैं। मुक्त हस्त से चित्रित ये दो आयामी पेंटिंग कलाकार की जीवन की धारणा को दर्शाती है।
- छत्तीसगढ़ के बस्तर में मुरिया नृत्य विचारों और भावनाओं के साथ गूंजते हुए जीवन की आध्यात्मिकता को दर्शाते हैं।
- गुजरात और मध्य प्रदेश की राठवा, भिलाल और नायका जनजातियों के बीच पिथोरा पेंटिंग भारतीय जनजातीय कला का एक और अच्छा उदाहरण है।
- ओडिशा की ढोकरा पीतल की मूर्तियाँ प्राचीन कहानियों की ओर ले जाती हैं।
- पश्चिम बंगाल की टेराकोटा बाँकुरा भावनाओं को मृदा कला से व्यक्त करने का सबसे सरल माध्यम है।
- वारली चित्रकला मातृ प्रकृति की अवधारणा पर ध्यान केंद्रित करती है। यह कला पूरी तरह से ग्रामीण जीवन को अभिव्यक्त करती है।

जनजातीय विरासत पर अस्तित्व का संकट

- जनजातीय संस्कृतियों पर बाज़ार-संचालित मूल्यों को थोपने से उनकी विशिष्ट पहचान और परंपराओं पर गहरा खतरा उत्पन्न हो गया है।

- उपभोक्तावाद और व्यावसायीकरण से प्रेरित बॉलीवुड की रचनात्मक संस्कृति का व्यापक प्रभाव, आदिवासी विरासत की प्रामाणिकता और समृद्धि को कमज़ोर करता है।
- जैसे-जैसे आदिवासी समुदाय ऐसे प्रभुत्व वाले आख्यानों को अपनाने का प्रयास करते हैं, वे अपनी सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और ज्ञान को खोने का जोखिम उठाते हैं।
- इसके अलावा, बड़े पैमाने पर उपभोग के लिए जनजातीय कलारूपों का वाणिज्यीकरण उनके सांस्कृतिक महत्त्व का शोषण करता है, जिससे शोषण और हाशिए पर जाने का चक्र लगातार बना रहता है।

राष्ट्रीय जनजातीय सांस्कृतिक नीति की आवश्यकता

- बाज़ार-संचालित वैश्वीकरण के दबावों के बीच आदिवासी संस्कृतियों के आंतरिक मूल्य को पहचानना और उनकी अखंडता को संरक्षित करना अत्यावश्यक है।
- भारत में एक राष्ट्रीय जनजातीय सांस्कृतिक नीति देश के जनजातीय समुदायों की समृद्ध और विविध सांस्कृतिक विरासत का सम्मान, संरक्षण और प्रचार करने के लिए अनिवार्य है।
- इन समुदायों के पास अनूठी भाषाएँ, परंपराएँ, कलाएँ और रीति-रिवाज हैं जो भारत की सांस्कृतिक संरचना में योगदान करते हैं।
- ऐसी नीति आदिवासी संस्कृति के संरक्षण और दस्तावेज़ीकरण को सुनिश्चित करने के साथ-साथ संस्कृति के प्रदर्शन, कलाकारों और कारीगरों के समर्थन के माध्यम से समुदायों को सशक्त बनाने, सांस्कृतिक बुनियादी ढाँचे को विकसित करने, लुप्तप्राय जनजातीय भाषाओं को पुनर्जीवित करने, सांस्कृतिक पहल में सामुदायिक भागीदारी को सुविधाजनक बनाने और हितधारकों के बीच सहयोग एवं साझेदारी को बढ़ावा देने के लिए महत्त्वपूर्ण है।

- जनजातीय संस्कृति के महत्त्व को पहचान कर और सहायक नीतियों को लागू करके, भारत की आने वाली पीढ़ियों के लिए अपने जनजातीय समुदायों के संरक्षण और समृद्धि को सुनिश्चित किया जा सकता है।

निष्कर्ष

- निसंदेह आदिवासियों का प्रकृति के प्रति सम्मान और प्रेम उनकी गहरी सूझबूझ का परिचायक है। आधुनिकता की अंधी दौड़ से पैदा हुए ग्लोबल वार्मिंग के खतरों से निपटने के लिए आज पूरी दुनिया को आदिवासी समाज से प्रकृति के साथ सामंजस्य से जीना सीखने की ज़रूरत है।